जीतने से पहले जीत और हारने से पहले हार कभी नहीं माननी चाहिये।

– अज्ञात

कुछ सेवाओं को सशर्त छूट

साथ ही इलेक्ट्रिक, आईटी, मोटर मैकेनिक, प्लंबर और कारपेंटर को भी कामकाज की छूट दी गई है। 20 अप्रैल के बाद ये सभी कारोबारी सामाजिक दूरी बनाते हुए अपना काम जारी रख सकते हैं। खेती से जुड़ी सारी गतिविधियां चालू रहेंगी।

अनिल प्रजापति।

लॉकडाउन बढ़ाए जाने के बाद केंद्रीय गृह मंत्रालय की ओर से जारी दिशा–निर्देशों में कुछ सेवाओं को सशर्त छूट दी गई है। इसमें किराना की दुकानें, राशन की दुकानें, सब्जी, फल, मीट, पोल्ट्री , खाद्यान्न, डेयरी, मिल्क बूथ और चारा की दुकानें खोलने की इजाजत है। साथ ही इलेक्ट्रिक, आईटी, मोटर मैकेनिक, प्लंबर और कारपेंटर को भी कामकाज की छूट दी गई है। 20 अप्रैल के बाद ये सभी कारोबारी सामाजिक दूरी बनाते हुए अपना काम जारी रख सकते हैं। खेती से जुड़ी सारी गतिविधियां चालू रहेंगी।

किसानों और खेत मजदूरों को फसल कटाई से जुड़े काम करने की छूट रहेगी। कृषि उपकरणों की दुकानें, उनकी मरम्मत और स्पेयर पार्ट्स की दुकानें खुली रहेंगी। उद्योग जगत ने कोविड–19 महामारी से बुरी तरह प्रभावित देश की अर्थव्यवस्था को नए सिरे से खड़ा करने के लिए 14 से 16 लाख करोड़ रुपये के प्रोत्साहन पैकेज की मांग की है।

फिक्की के मुताबिक राष्ट्रव्यापी लॉकडाउन की वजह से हर रोज 40 हजार करोड़ रुपये का नुकसान हो रहा है। इस हिसाब से पिछले 21 दिनों में 7–8 लाख करोड़ रुपये के नुकसान का अनुमान है। फिक्की का कहना है कि इस साल अप्रैल से सितंबर के बीच 4 करोड़ लोगों की नौकरियां खतरे में हैं। इससे बचने के लिए एक तात्कालिक राहत पैकेज जरूरी है। लॉकडाउन के दूसरे चरण में दी गई छूटों से प्रारंभिक स्तर की कुछ आर्थिक गतिविधियां पटरी पर आ सकती हैं। इससे एक बड़े तबके की रोजी–रोटी पर लगा ताला भी खुलेगा। हालांकि इसमें सबसे बड़ी चुनौती सोशल डिस्टैंसिंग का पालन कराने की रहेगी।

इस काम में जरा भी ढिलाई बरती गई तो खतरा बहुत बढ़ जाएगा क्योंकि इन छूटों से लोगों की आवाजाही बढ़ेगी और लोग समूह में जुटेंगे भी। ऐसे में फैक्ट्री और दुकान मालिकों को पूरी जवाबदेही खुद पर लेनी होगी क्योंकि इसके लिए हर जगह पुलिस नहीं लगाई जा सकती। आने वाले समय में मिडल क्लास से जुड़े काम–धंधे पर भी ध्यान देना होगा। आखिर यह तबका कब तक सब कुछ छोड़कर घर बैठा रहेगा?

प्रधानमंत्री के निर्देश के बावजूद मध्यवर्गीय नौकरियों में छंटनी की खबरें आने लगी हैं। कहीं ऐसा न हो कि महामारी के समानांतर समाज में एक भारी उथल–उथल के हालात भी पैदा हो जाएं। उद्योगों की मांग पर सरकार को विचार करना ही होगा लेकिन इंडस्ट्री को फिर से मजबूत बनाने के लिए बाजार में मांग होना जरूरी है। इसके लिए किसानों को अलग से सहायता देनी होगी। मजदूरों को अभी कुछ और दिनों तक राशन और अन्य सरकारी सहायता की जरूरत पड़ेगी। पिछले महीने ही सरकार ने 1.70 लाख करोड़ रुपये का राहत पैकेज जारी किया है, लेकिन समस्या यह है कि कोविड–19 का संकट अभी ज्यों का त्यों बना हुआ है। उससे जूझने में कितना समय और धन खर्च होने वाला है, कोई नही जानता। इसलिए सरकार चाहकर भी अपने सारे पत्ते अभी के अभी नहीं खोल सकती।

ध्यान केन्द्रित करें

अशोक वोहरा। जब सब कुछ सहज तरीके से चल रहा हो... जीवन बिना व्यवधान आगे बढ़ रहा हो तब अपने भीतर चेतना का भाव जागृत करना और ज्यादा जरूरी हो जाता है। यह आपके भीतर और आसपास ऊर्जा के उस प्रवाह को उत्पन्न करता है जिसकी आवृत्ति काफी ज्यादा है। इस ऊर्जा क्षेत्र में अचौतन्य, हिंसा, किसी प्रकार का मनमुटाव.... प्रवेश नहीं कर सकते और ना ही वह उस क्षेत्र के भीतर पनप सकते हैं। जब आप अपने विचारों और भावनाओं के साक्षी बनने लगते हैं... जो कि आपके वर्तमान का एक जरूरी हिस्सा है... तब आप यह जानकर काफी हैरान होंगे कि आपकी पृष्ठभूमि स्थिर है... वह गतिशील नहीं है... आप अंदरूनी तौर पर पूरी तरह सहज हैं। विचारों के स्तर पर आप न्याय, असंतोष, मानसिक प्रक्षेपण के रूप में प्रतिरोधक शक्तियों का भी सामना करेंगे।

संपादकीय

एक मिसाल देखिए

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोगों से आग्रह किया कि वह कोरोना से लड़ रहे लोगों के प्रति कृतज्ञता जताने के लिए ताली–थाली, शंख वगैरह बजाएं लेकिन बहुत से कोरोअहमक (कोवीडियट) थालियां, शंख, ढोलक और मजीरे आदि लेकर भारी भीड़ के रूप में गलियों में निकल गए। उधर कोज्ञापालकों (कोबीडियंट) की भी कमी नहीं थी। जैसे कचरे से कागज, पॉलीथीन आदि इकट्ठा करने वाला गरीब इंसान, जो ठीक पांच बजे अकेला खड़ा होकर ताली बजा रहा था। महामारी ने कुछ पुराने शब्दों और पहले से मौजूद शब्दों को भी नई जिंदगी के साथ–साथ नए अर्थ दे दिए हैं। मिसाल के तौर पर लॉकडाउन का इस्तेमाल हड़तालों आदि के दौरान ज्यादा सुनने में आता था। लेकिन आज वह सामाजिक संदर्भ में इस्तेमाल हो रहा है। सोशल डिस्टैंसिंग अब तक उन लोगों के संदर्भ में इस्तेमाल होता था जो समाज से अलग–थलग बने रहते हैं। यह उन लोगों के संदर्भ में भी इस्तेमाल होता था जिन्हें किसी कारण से समाज से अलग–थलग कर दिया गया है। हमारे यहाँ पर बुरी ही सही लेकिन गांव–बाहर, जात–बाहर या हुक्का पानी बंद करने जैसी अवधारणाएं प्रचलित हैं जो इसकी पारंपरिक परिभाषा के दायरे में आती थीं। लेकिन अब सोशल डिस्टैंसिंग एक सकारात्मक संदर्भ में सामने आया है। लोग खुद को सुरक्षित रखने के लिए एक–दूसरे से उचित दूरी बनाकर चल रहे हैं।

क्वारंटाइन शब्द भारतीयों के लिए कुछ हद तक अनसुना सा है। हमारे यहां यह अवधारणा तो प्रचलित रही है (कुष्ठ, चेचक, तपेदिक जैसे रोगों तथा मृत्यु–उपरांत एकांत जैसे संदर्भों में) लेकिन ऐसे शब्द मौजूदा प्रचुरता में शायद ही कभी इस्तेमाल हुए हों।

महामारी ने बहुत सारे नए शब्द पैदा किए हैं। ऐसे ही शब्द जब करीब-करीब हर इंसान के दैनिक जीवन में जगह बना लें तो उन तक पहुंचना शब्दकोशों की पहली जिम्मेदारी बन जाती है।

नए शब्द पैदा किए

बालेन्दु दाधीच।

दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित शब्दकोशों को अपनी शब्दावली में विशेष अपडेट के लिए बाध्य होना पड़ा है। वजह है– कोरोना वायरस से पैदा हुआ मौजूदा संकट। महामारी ने बहुत सारे नए शब्द पैदा किए हैं। ऐसे ही शब्द जब करीब–करीब हर इंसान के दैनिक जीवन में जगह बना लें तो उन तक पहुंचना शब्दकोशों की पहली जिम्मेदारी बन जाती है। नतीजतन मरियम वेब्स्टर शब्दकोश ने अपने इतिहास का सबसे तेज अपडेट किया है जबकि ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी ने भी तिमाही अपडेट का इंतजार किए बिना कोरोना वायरस से जुड़े 14 नए शब्द जोड़े हैं।

दिलचस्प यह है कि दोनों के बीच बहुत कम शब्द साझा हैं। उम्मीद करनी चाहिए कि हिंदी शब्दकोश निर्माता भी जल्दी ही इन हालात की सुध लेंगे। मरियम वेब्स्टर शब्दकोश में शब्दों को तेजी से शामिल किए जाने का यह दूसरा मामला है। पिछली बार ऐसा 1984 में हुआ था जब एड्स की बीमारी ने दुनिया को भयभीत कर दिया था। हालांकि किसी नए शब्द को इस डिक्शनरी में शामिल होने के लिए एक कड़े मापदंड से गुजरना पड़ता है। वह मापदंड है– उस शब्द का करीब एक दशक तक चलन में रहना। लेकिन जब एड्स की महामारी आई तो

पूरी दुनिया में उसका बहुत ज्यादा खौफ था और इस सूचना को विश्व स्तर पर फैलाना भी बहुत ज्यादा जरूरी था।

तब पहली बार एक ऐतिहासिक कदम उठाते हुए इस शब्दकोश में एड्स शब्द जोड़ा गया। एड्स यानी एक्वायर्ड इम्यूनो डेफीसियंसी सिंड्रोम। तब तक इस लफ्ज को इस्तेमाल होते हुए दो साल बीत चुके थे। बहरहाल, अब मरियम वेब्स्टर डिक्शनरी ने अपना स्पेशल अपडेट जारी किया है जिसमें कोरोना वायरस की महामारी से जुड़े हुए करीब एक दर्जन शब्द शामिल किए गए हैं। ये शब्द महज 34 दिन के भीतर यहां आ पहुंचे हैं तो जाहिर है कि इनके पीछे छिपी अवधारणाओं की अहमियत को इस शब्दकोश ने मान्यता दी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने 11 फरवरी को जिनेवा में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में ऐसे कुछ शब्दों का जिक्र किया था। इसके अलावा पहले से मौजूद कुछ शब्दों को भी नए संदर्भों और अर्थों के साथ अपडेट किया गया।

नई एन्ट्रीज हैं– कोरोनावायरस डिजीज 2019, कोविड–19, कम्यूनिटी स्प्रेड (सामुदायिक प्रसार), कॉन्टैक्ट ट्रेसिंग (संपर्क खोज), सोशल डिस्टैंसिंग (सामाजिक अंतराल), सुपर स्प्रैडर (महा–प्रसारक), इंडेक्स केस (प्रथम प्रकरण), इंडेक्स पेशेंट (प्रथम रोगी), पेशेंट जीरो (मूल रोगी) और सेल्फ क्वैरंटीन (निजेकांतवास)। ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश ने मरियम वेब्स्टर के अपनाए शब्दों में से सिर्फ तीन चुने हैं– कोविड 19, सोशल डिस्टैंसिंग और सेल्फ–क्वैरंटीन। बाकी 11 शब्द ये हैं– एल्बो बंप (कोहनी उभार), टु फ्लैटन द कर्व (प्रसार समतलन), इन्फोडेमिक (सूचना–महामारी), पीपीई (निजी सुरक्षा उपकरण), आर0 या आरनॉट (किसी एक संक्रमित से संक्रमण पाने वाले लोगों की औसत संख्या), सेल्फ–आइसोलेट (स्व–पृथकवास या स्वेकांत), शेल्टर इन प्लेस (अपने स्थान में सीमित), सोशल आइसोलेशन (सामाजिक अलगाव) और डब्लूएफएच (वर्क फ्रॉम होम यानी घर से काम)। अभी कुछ शब्द इन डिक्शनरियों को प्रभावित नहीं कर सके हैं। कोरो उपसर्ग का प्रयोग करके बने शब्द बड़े अनूठे हैं और अलग पहचान बनाते जा रहे हैं, जैसे– कोवीडियट और कोबीडियंट।

सूडोकु नवताल-5324

सरल

		2				1		
				2	5	7	3	
	9	4		6	7			2
	5		4		3			9
	8			9			7	
1			6		8		2	
6			7	4		9	5	
	4	5	8	3				
		8				6		

Jagrutidaur.com, Bangalore

- प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक हैं.
- प्रत्येक आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 3×3 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें.
- पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते.
- पहेली का केवल एक ही हल है.

सूडोकु नवताल -5323 का हल

9	1	6	2	3	7	4	5	8
8	2	3	4	5	9	1	7	6
4	5	7	1	6	8	3	9	2
5	6	8	7	1	2	9	3	4
1	7	4	9	8	3	2	6	5
2	3	9	5	4	6	8	1	7
7	4	1	8	9	5	6	2	3
3	8	5	6	2	1	7	4	9
6	9	2	3	7	4	5	8	1

अपना ब्लॉग

ऐसा कोई प्रावधान है ही नहीं

मोहन। मैं उस वक्त एक्शन कमिटी नाम से अपना एक संगठन चलाता था। श्रीराम कॉलेज से बी.कॉम ऑनर्स कर रहा था। फर्स्ट ईयर में मैं यूनिवर्सिटी में रैंक होल्डर था। लेकिन 1981 में जब सेकंड ईयर का रिजल्ट आया तो मेरे महज 50 पर्सेंट नंबर आए और लॉ में तो बस 40 पर्सेंट। वाइस चांसलर से जब पुनर्मूल्यांकन की बात की तो उन्होंने कह दिया कि ऐसा कोई प्रावधान है ही नहीं। मैंने उनसे यह भी कहा कि मेरे एक रिश्तेदार डीयू में ही एमकॉम के प्रफेसर हैं और जब मैं 12 वीं में था तो मैंने उनके घर पर कई बार एमकॉम के छात्रों के पेपर चेक किए हैं, तो इस तरह पेपर चेक होते हैं यूनिवर्सिटी में। मुझमें गुस्सा था और इसी बीच जनता विद्यार्थी मोर्चा ने मुझसे संपर्क किया। अरुण जेटली उस वक्त सभी छात्रों के हीरो होते थे। जेटली ने मुझसे कहा कि मैं जनता विद्यार्थी मोर्चा से अध्यक्ष पद का चुनाव लडूं। हमारा पूरा पैनल जीत गया।